बदमाश बंदर

एक दिन की बात है सभी मजदूर **दोपहर** में खाना खाने को गए और एक लकड़ी अधचिरा लठ्ठा वहाँ रखा हुआ था. उसमें मजदूरों ने एक **कील** फंसा कर उसे रखा था, जिससे वापस **आरी** घुसाने में आसानी हो.

तभी बंदरों का झुण्ड वहाँ आ पहुंचा और उछल कूद करने लगा. शरारती बन्दर सभी चीजों से छेड़छाड़ करने लगा. बंदरों के सरदार ने सबको ऐसा करने से मना किया.

सारे बन्दर पेड़ों पर चढ़ गए , लेकिन वह शरारती बन्दर उसका आदेश नहीं माना और वहाँ रखे सामानों से छेड़छाड़ करने लगा. तभी उसकी नजर अधचिरे लठ्ठे पर पड़ी.

उसके दिमाग में खुराफात सूझी .उसने वहाँ पड़ी आरी उठाई और उस लठ्ठे को काटना शुरू किया. उसमें से " किर्र - किर्र" की आवाज आई . इससे वह चिढ गया और आरी पटक दी. तभी उसने सोचा इस लट्ठे में कील क्यों घुसाया हुआ है. उसने उस कीले को निकालना शुरू किया.

वह खूब जोर आजमाइश करने लगा. कभी उछल कर उधर जाता तो कभी इधर. कील बहुत ही मजबूती से लगाया जाता है . इतनी आसानी से नहीं निकलता है.

लेकिन वह बन्दर इसे अपमान समझ लिया. उसने खूब जोर लगाया और कील थोड़ा सा हिला. बन्दर को अपनी ताकत पर नाज हुआ. उसने " खों - खों " कर अपनी ताकत का प्रदर्शन किया.

उसके बाद उसने फिर से जोर लगाया और कील निकल गया, लेकिन दो पाटों के बीच उसकी पूंछ फंस गयी. वह जोर से चिल्लाया. तभी मजदूर वापस लौटे. उन्हें देख वह डर गया और भागने के लिए उसने जोर लगाया तो उसकी पूंछ टूट गयी . वह चीखता चिल्लाता वहाँ से भागा.

बिना सोचे - समझे कोई काम नहीं करना चाहिए. जब भी कोई कार्य करना हो तो उसे सोचो फिर करो, अन्यथा जिंदगी भर पछताना पड़ता है। छात्रों की उम्र हमें अच्छे - बुरे का ज्ञान नहीं होता है। अतः बड़े - बुजुर्ग या कोई भी कुछ नेक सलाह दे तो उसे मान लेना चाहिए। अगर बन्दर सलाह मान गया होता तो उसकी पूँछ नहीं कटती।

धर्मशाला

एक **धर्मात्मा** ने गाँव के मोड़ पर एक **राहगीरों** के लिए एक धर्मशाला का निर्माण किया. जिससे आने जाने वाले लोग इसमें आराम करके अपनी थकान मिटा सके . लोग आते जाते रहे और वहाँ का दरबार जब कोई व्यक्ति वहाँ से जाता तो उससे यह जरूर पूछता कि आपको यहाँ कैसा लगा और इसे बनाने वाले का उद्देश्य क्या है.

उसने किस उद्देश्य से इस धर्मशाला का निर्माण कराया है. इसपर सबके अपने – अपने विचार थे. सभी अपनी दृष्टि , अपनी सोच के हिसाब से इसके निर्माण का उद्देश्य बताते.

चोरो ने कहा कि चोरी करके यहाँ चोरी के सामन को गुप्त रखा जा सकता है. फिर चोरों ने कहा कि छापे से बचने के लिए यहाँ कुछ दिन छुप कर रहा जा सकता है. **साधू संतों** ने कहा कि यहाँ बैठकर शान्ति से साधना की जा सकती है. चित्र कलाकारों ने कहा, " यहाँ एकांत का स्थान है अतः हम अच्छी **कलाकृति** बना सकते हैं. "

कवियों ने कहा कि यहां **विरह के गीत** लिखे जा सकते हैं . विद्यार्थियों ने कहा कि यहाँ बहुत अच्छे ढंग से अध्ययन किया जा सकता है. इसी तरह हर कोई अपनी दृष्टि , अपनी सोच के आधार पर अपने अनुभव साझा करता.

यह बात **दरबान** ने धर्मात्मा को बतायी . धर्मात्मा ने कहा जिसका जैसा **व्यक्तित्व** होता है वैसी ही उसकी दृष्टि , उसकी सोच होती है. वह हर चीज को उसी नजरिये से देखता है .

लेकिन एक बात तो तय है कि धर्मशाला बनाने का का हमारा उद्देश्य जरूर सफल हो गया, लेकिन हमें इस बात को ध्यान रखना होगा की यह कुकर्मों का अड्डा ना बनकर **सत्कर्मों** की पाठशाला बने, जहां अनेक सोच और उद्देश्य को रखने वाले लोग अपनी सोच और उद्देश्य को साझा कर सके.

हमारा यह शरीर धर्मशाला है। यहां अच्छे और बुरे सभी प्रकार के लोग अपनी बात रूपी सामान को रखना चाहेंगे, लेकिन हमें सिर्फ अच्छी सलाह को ही रखना है और बुरी सलाह को दूर फेंक देना है।